

अभियान



पुष्परजन

विश्व गुरु शांति प्रयास में पीछे क्यों रह गये?

प्रृष्ट जो बाइडेन कन्प्यूट है। हमास के हमले के समय बयान देते रहे कि हम नेतन्याहू के साथ हैं। अब बोले कि जिस तरह का हमला गाज़ा में हुआ, उसकी पुनरावृति नहीं होनी चाहिए। भारत की तरह अमेरिका में भी 2024 में चुनाव है। फर्क़ इतना भर है कि जिस तरह भारत में इस समय पांच राज्यों में चुनाव है, अमेरिका उस तरह से दो-चार नहीं है। वहां एक राठंड में ही फाइनल चुनाव है। भारत में फाइनल से पहले कई सेमीफाइनल हैं। पीएम मोदी इस समय पांच राज्यों में आहूत सेमीफाइनल की व्यूह रचना में खुद इतना उत्तम गये कि सांस लेने तक की फुर्सत नहीं है। संभवतः यही विवरता है कि पीएम मोदी मध्यपूर्व में शांति के लिए लीड नहीं ले रहे हैं।

पैमाने पर गाजा में नरसंहार हुआ, उसे देखते हुए जो बाइडेन भी चौतरप्रद दबाव में आ गये लगता है। गुरुवार को उन्हें कहना पड़ा कि ऐसी गलती न दोहराए जाए। ऐसे बयान का मतलब यही होता है कि मानवता के विरुद्ध इजराइल ने अपराध किया है। अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायालय में बैजिमिन नेतन्याहू पुतिन के बाद इस कालखंड के दूसरे नेता शायद हो जाएं, जिन्हें युद्ध अपराधी घोषित कर गिरफ्तारी का बारंट जारी कर दिया जाए।

इस समय दो तीन बड़े सवाल हैं। सबसे पहला कि गाज़ा में फंसे बंधकों को बाहर कैसे निकाला जाए, साथ में जो स्थानीय नागरिक हैं, उन्हें आबोदाना और सुरक्षित आशियाना कैसे मुहैया कराया जाए? दो, जो कुछ फिलिस्तीन-

हुए 1979 में कैंप डेविड समझौते के आधार पर मिस्र ने शांति समझौते पर हस्ताक्षर कर इजराइल को मान्यता दी। उसके प्रकारांतर जॉर्डन ने वर्ष 1994 में इजराइल के साथ सुलह कर लिया। इस बीच इजराइल और फ़िलिस्तीन ने 1993 और 1995 में ओस्लो समझौते पर हस्ताक्षर किए। लेकिन 2000 के दशक की शुरुआत में जब इजरायल में विद्रोह की एक श्रृंखला शुरू हुई, तो समझौते टूट गए। 13 अगस्त 2020 को इजराइल-यूएई के बीच शांति समझौते की घोषणा हुई, और उसके प्रकारांतर 11 सितंबर को बहरीन-इजराइल समझौते पर हस्ताक्षर हुए। इन समझौतों में अमेरिका और सऊदी अरब की अहम भूमिका को हम नकार नहीं सकते।

मान्यता दी थी, और 1992 में दोनों देशों के बीच कूटनीतिक संबंध स्थापित हुए थे। 2022 में अदानी समृद्ध है और एक इजराइली भागीदार ने हाइफा पोर्ट के लिए 1.2 बिलियन डॉलर का टेंडर जीता। कुछ महीनों से भारत-इजराइल मुक्त व्यापार समझौते के लिए भी बातचीत चल रही है। बेशक, भारत के फिलिस्तीनियों के समर्थन में कभी-कभार अपनी पुरानी लाइन पर वापिस लौट आता है। भारत के साथ ईरान के भी मैत्रीपूर्ण संबंध हैं, लेकिन इस समय ईरान जिस इजराइल को ललकारा रहा है, उस तेवर से भारत का इतकाकर रखना भी सहज नहीं है।

मिस की भी मोदी से निकटता बढ़ी है, जहाँ

बीता समाह

भारत में महिला श्रम शक्ति की हालत बताने वाला नोबेल पुरस्कार

इ साल अर्थशास्त्र का नाबल पुरस्कार हावड़ीवश्वावद्यालय का प्रोफेसर क्लाउडिया गोल्डन को दिया गया है। वे इस पुरस्कार को जीतने वाली इतिहास की तीसरी महिला हैं और स्वतंत्र रूप से सम्मानित होने वाली पहली हैं। एकल पुरस्कार विजेता के रूप में अर्थशास्त्र का नोबेल पाने वाली पहली महिला होना बहुत खास है। नोबेल प्रशस्ति पत्र में उनके पांच दशकों के काम का वर्णन करते हुए कहा गया है कि यह पुरस्कार 'महिलाओं के श्रम बाजार के परिणामों की हमारी समझ को उत्तेजित करने के लिए है।' उनके कुछ व्यावहारिक और मूल योगदान अब आम ज्ञान बन गए हैं। ये याद रखने योग्य हैं और जिनकी यहां चर्चा की जा रही है। उनका सबसे महत्वपूर्ण और निश्चित अध्ययन अमेरिकी इतिहास के 200 वर्षों में महिलाओं की श्रम शक्ति भागीदारी और परिणामों का है। अमेरिकी आंकड़ों से निकाले गए उनके कई नतीजे और निष्कर्ष सांस्कृतिक और भौगोलिक मतभेदों के बावजूद भारत सहित अधिकांश अन्य देशों पर लागू होते हैं।

कलक भा। विशेष रूप से मध्यम आय वाल पारवारा का माहलाओं का भागादरा को रोक सकता है। यू-आकार को प्रदर्शित करने वाला जो एक अन्य कारक है वह है महिलाओं की शिक्षा। अनपढ़ या कम शिक्षा वाले लोगों के वर्ग में महिलाएं अधिक भागीदारी लेती हैं। अल्प शिक्षा (जैसे मिडिल स्कूल तक) के साथ उनकी भागीदारी दर गिर जाती है। उच्च शिक्षा (कॉलेज या स्नातकोत्तर) के साथ उनकी भागीदारी फिर से बढ़ जाती है। यह भी यू-शेप है। यह क्रम भारतीय आंकड़ों में भी देखा जाता है। यहां यू-आकार के लिए स्पष्टीकरण श्रम के आपूर्ति पक्ष से नहीं है या यह कि मध्यम शिक्षित महिलाएं काम नहीं करना चाहती हैं। यह वास्तव में श्रम की मांग की ओर से है। हाई स्कूल या मिडिल स्कूल तक शिक्षा प्राप्त महिलाओं के लिए पर्याप्त और उपयुक्त नौकरियां नहीं हैं। इसलिए नौकरियों के अभाव में वे श्रम बल से बाहर हो जाती हैं।

A black and white portrait of Dr. Ajit Ranade, a middle-aged man with a beard and mustache, wearing a suit and tie.

डॉ. अजीत राना

विभिन्न संस्कृतियों में यह धब्बा देरवा गया है। इस प्रकार का सामाजिक कलंक भी विशेष रूप से मध्यम आय वाले परिवारों की महिलाओं की भागीदारी को रोक सकता है। यू-आकार को प्रदर्शित करने वाला जो एक अन्य कारक है वह है महिलाओं की शिक्षा। अनपढ़ा कम शिक्षा वाले लोगों के वर्ग में महिलाएं अधिक भागीदारी लेती हैं। अल्प शिक्षा (जैसे मिडिल स्कूल तक) के साथ उनकी भागीदारी दर गिर जाती है।

यानी प्राइम एज महिला से पैदा हुए बच्चों की औसत संख्या में तेजी से गिरावट आई है। गोल्डिन के काम से एफएलएफपीआर को बढ़ाने में गर्भनिरोधक की विशेष भूमिका भी उजागर होती है। उनका काम कार्यस्थल में भेदभाव के खिलाफ और समान वेतन के लिए महिलाओं के संघर्ष को भी कवर करता है। नोबेल पुरस्कार विजेता गोल्डिन

के पूरे ओर समृद्ध काम को एक लेख में वर्णित नहीं किया जा सकता। गोल्डिन को मिला नोबेल पुरस्कार भारत के लिए इससे अधिक समयानुकूल और प्रासंगिक नहीं हो सकता था। भारत में दो दशकों से एफएलएफपीआर लगातार गिर रहा है हालांकि हाल ही में इसमें कुछ वृद्धि हुई है। 2023 का आर्थिक सर्वेक्षण भी देश भर के उन 12 मिलियन स्वयं सहायता समूहों की मूक क्रांति का दस्तावेजीकरण करता है जो लगभग पूरी तरह से महिलाओं द्वारा चलाए जाते हैं। संसद और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के आरक्षण के लिए हाल ही में लाया गया कानून भी बहुत जल्द नहीं आया है। सरकार के तीसरे स्तर में आरक्षण को धन्यवाद दिया

जाना चाहिए जिसके कारण अधिकांश राज्यों में गांव, शहर और नगर परिषदों और निगमों में सभी निर्वाचित व्यक्तियों में से आधी महिलाएं हैं। कई कंपनियां महिलाओं को उनकी पहली या दूसरी गर्भावस्था यानी मिड कैरियर के बाद फिर से भर्ती करने की कोशिश करने में सक्रिय हैं। दो कमियां दिखाई देती हैं जिन्हें भारत सरकार को तत्काल भरना चाहिए। पहला पुरुष और महिला श्रम भागीदारी दर (आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार 56 और 28 फीसदी) के बीच का अंतर है और दूसरा एक ही काम के लिए पुरुष और महिला कर्मचारियों के बीच का वेतन अंतर है। यदि इन दोनों अंतरों को समाप्त कर दिया जाता है तो भारत के सकल घरेलू उत्पाद में काफी वृद्धि हो सकती है। गोल्डन को मिले पुरस्कार के कारण ये मुद्दे फिर फोकस में आ गए हैं।

महिला भागीदारी के यू-शेप का एक और पहलू पूरी अर्थव्यवस्था के आर्थिक विकास प्रक्षेप वक्र (इकॉनोमिक डेवलपमेंट ट्रेजक्टरी) के माध्यम से ही न देखते हुए परिवार की आय और सामाजिक रीति-रिवाजों के लंस के जरिए से भी देखा जाना चाहिए। बहुत गरीब परिवारों की महिलाएं काम करने के लिए विवश हैं। इसलिए कार्यबल की भागीदारी दर अधिक है। जैसे-जैसे परिवार की आय बढ़ती है, महिलाएं पैदे हुट जाती हैं और घर के काम और बच्चों की देखभाल करने लगती हैं। अमीर और बहुत अमीर परिवारों के लिए कार्यबल भागीदारी दर फिर से बढ़ जाती है। यह भी यू-आकार का है लेकिन घरेलू आय के संबंध में है। इस पैटर्न को सामाजिक रीति-रिवाजों द्वारा और अधिक विकृत किया गया है। यदि कोई महिला घर से बाहर वेतन के लिए काम कर रही है तो इसे एक सामाजिक कलंक से जुड़ा माना जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि घर का 'आदमी' या तो आलसी है या अपने परिवार के लिए पर्याप्त कमाने में असमर्थ है।

(लेखक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री हैं। सिडिकेट : दी बिलियन प्रेस)

